श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

अभिस्वीकृति का महत्त्व

सत्संग का आयोजन होने वाला है, यह बात आपको अपने रहने के स्थान के अनुसार, एक रात पहले या कुछ ही घण्टों पहले पता चली होगी। फिर भी आपमें से कइयों ने इसमें भाग लेने का हर सम्भव प्रयास किया, यह देखकर व इसके बारे में सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। बहुत-से लोगों की परिस्थिति को देखकर तो ऐसा लगा कि कोई महान शक्ति है जो सत्संग में भाग लेने में आपका सहयोग कर रही है। ऐसा ही कुछ विस्कॉन्सिन से एक सिद्धयोगी ने बाद में सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर बताया :

> मेरी ग्यारह वर्ष की बेटी हर रात प्रार्थना करती रही है कि उसे गुरुमाई जी के दर्शन हों। यह संकल्प सालों से उसके मन में विशेष रूप से बना रहा है।
>
> आज सुबह, सत्संग शुरू होने से ठीक पहले हमारे पास उसके स्कूल से फ़ोन आया कि स्कूल की बिजली चली गई है। हमारे इलाक़े में ऐसा कई स्कूलों में हुआ था, पर अकेला उसका स्कूल ही ऐसा था जहाँ जॅनरेटर काम नहीं कर रहा था, इसलिए सभी बच्चों को बसों से जल्दी घर भेजा जा रहा था। बिल्कुल सही समय पर उसने दरवाज़े से प्रवेश किया, गुरुमाई जी के साथ नामसंकीर्तन किया, उन्हें बोलते हुए सुना और उनके दर्शन किए!

गुरुमाई जी ने जब बोलना आरम्भ किया तो उन्होंने सबसे पहले, इतनी अल्पकालीन सूचना पर वैश्विक हॉल में आने के लिए सबकी सराहना की। मेरे लिए यह बात बहुत ही प्रासंगिक थी और इसने मेरे दिल को छू लिया। मुझे गुरुमाई जी से यह मार्गनिर्देशन मिला है और मैंने उन्हें दूसरों को भी यह मार्गनिर्देशन देते हुए सुना है कि लोगों की सराहना करना और उन्हें धन्यवाद देना कितना महत्त्वपूर्ण है।

यह मेरा सौभाग्य भी रहा है कि अनेक अवसरों पर मुझे गुरुमाई जी से विशिष्ट और व्यक्तिगत रूप से सराहना मिली है। इन क्षणों में, मैंने अभिस्वीकृति की, सराहना की सम्पूर्ण शक्ति को महसूस किया है—अपने हृदय में व उसके चारों ओर, सूर्य के ही प्रकाश जैसी स्वर्णिम आभा के रूप में और इस अटल विश्वास के रूप में महसूस किया है कि मेरा भी महत्त्व है। जो मैं कर रही हूँ, उसका महत्त्व है। जब भी मुझे गुरुमाई जी से अपने कार्य के लिए सराहना मिली है, मुझे ऐसा लगा है कि मैं कुछ भी कर सकती

हूँ, किसी भी चुनौती का सामना कर सकती हूँ और गुरुमाई जी के लिए व उनके मिशन के लिए ऐसा करना मेरे लिए बहुत आनन्द की बात होगी।

मुझे दूसरों से भी काफ़ी सराहना मिली है। मैं अपनी बड़ाई करने के लिए ऐसा नहीं कह रही हूँ [सच में! मेरा यक़ीन मानिए!], बल्कि यह बताने के लिए कह रही हूँ कि मुझे मालूम है कि जब कोई कुछ पल देकर आपको बताता है कि वह आपके काम की, आपके प्रयासों की सराहना करता है तो कैसा महसूस होता है। बहुत फ़र्क़ पड़ता है इससे। मुझे मिली हुई हर सराहना, हर मान्यता से मुझे फ़र्क़ पड़ा है। और मैं आशा करती हूँ कि मैंने जिन लोगों के भी काम को मान्यता दी है, उसकी सराहना की है, उन्हें भी ऐसा ही महसूस हुआ होगा—कि उनके प्रति व्यक्त की गई मेरी सच्ची कृतज्ञता को उन्होंने महसूस किया होगा।

जब गुरुमाई जी ने सभी को वैश्विक हॉल में आने के लिए धन्यवाद दिया तो ऐसा लगा कि मैंने अभिस्वीकृति के बारे में, सराहना करने के बारे में जो कुछ भी सीखा और अनुभव किया है, वह मेरे अन्दर समा गया, एकरूप हो गया। मुझे याद आया कि यह अभ्यास कितना महत्त्वपूर्ण है। हमें लोगों को यह बताना *ही* चाहिए कि उनके प्रयास सराहनीय हैं। कई संस्कृतियों में, इस प्रकार सराहना करना, कृतज्ञता अभिव्यक्त करना, स्थापित सामाजिक शिष्टाचार का एक हिस्सा है। कुछ लोग इस शिष्टाचार का पालन करते हैं; कुछ लोग नहीं करते। तथापि, सिद्धयोग पथ पर गुरुमाई जी ने हमें यह सिखाया है कि ऐसा करना अच्छा व ज़रूरी है। दूसरों के प्रति कृतज्ञ होना, एक प्रकार की पूजा है। हृदय से धन्यवाद देना वन्दना है। मैं समझती हूँ कि उस दिन श्रीगुरुमाई की अभिस्वीकृति हममें से हरेक के लिए उनका प्रसाद था।

इसलिए अब, मैं सोच रही हूँ : *आप* लोगों को किस प्रकार धन्यवाद देते हैं, किस प्रकार *आप* उनकी अभिस्वीकृति करते हैं, उनकी सराहना करते हैं?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।